कवर पेज सहित 36 पृष्ठ
वर्ष 25
अंक 11
नवम्बर, 2019
मूल्य 15 रुपये

रूपरेखा

सदाचार ~ सद्विचार ~ सत्संस्कार

जीवन एक वीणा है उस पर गाना सीखो,
निर्झर ज्यों करुणा जल तुम बरसाना सीखो ।

रूपरेखा

सदाचार ~ सद्विचार ~ सत्संस्कार

मार्गदर्शन :
पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी

संयोजना :
साध्वी कनकलता
साध्वी वसुमती

परामर्शक :
श्रीमती मंजुबाई जैन

प्रबंध संपादक :
अरुण कुमार पाण्डेय

सम्पादक :
श्रीमती निर्मला पुगलिया

वार्षिक शुल्क : 150 रुपये
आजीवन शुल्क : 3000 रुपये

प्रकाशक
अरूण तिवारी
मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.)
पोस्ट बॉक्स नं. : 3240
सराय काले खाँ बस टर्मिनल के सामने,
नई दिल्ली - 110013
फोन नं. : 26345550, 26821348
Website : www.rooprekha.com
E-mail : contact@manavmandir.info

इस अंक में

प्रकृति जीवन और जगत में संतुलन स्थापित करती है
यह सवाल आज का नहीं, हमेशा से उपस्थित रहा है। किसी भी युग के कालखंड में विचारों और मान्यताओं को थोपने का चलन रहा है। बीसवीं सदी के अंतिम दो दशकों में एक क्या, कई आत्मविभूषित 'महामानवों' ने यह भविष्यवाणी की थी कि प्रलय आने वाला है। जिन्हें जिंदा रहना है, वे उनकी शरण में आ जाएं। उनका पंथ ही जिंदा रह पाएगा। वे मुझे भी पटाने आ गए थे कि ऐसे स्वर्णिम अवसर का फायदा उठाने में पीछे न रहूं। तब मैंने उन्हें कहा था कि सारी सृष्टि का ही अगर प्रलय होने वाला है तो मैं बचकर क्या करूंगा? मैं सृष्टि के साथ ही रहना चाहता हूं, केवल कुछ विशेष देवताओं के साथ नहीं। 05

हंस अकेला
अर्थव्यवस्था के दो पक्ष होते हैं- पूँजी और श्रम। इनमें भी सर्वोच्च स्थान श्रम का है। महावीर ने श्रम को जितनी बड़ी प्रतिष्ठा दी, उतनी शायद ही मार्क्स दे पाया हो। उन्होंने कहा है- 'जो श्रम करता है, वही श्रमण है। संत है।' 'श्रम ही साधना'- यह बात संसार में विचारक टालस्टॉय कह पाये थे, जिसे रूस की जनता साम्यवाद का प्रणेता मानती है। उससे भी पूर्व महावीर ने श्रम को इतनी प्रतिष्ठा दी थी। 12

परिश्रम पाता है सम्मान
समाज में सम्मान उन्हीं लोगों को मिलता है, जो परिश्रम और सृजनात्मकता के माध्यम से लोगों के सम्मुख अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। हर कोई ऐसे व्यक्तित्व के धनी लोगों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता है। हर कोई उनके ही गुणों, कर्मों इत्यादि का उदाहरण सबको देते हैं। वहीं हमारे बीच में कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो अपने आलस्य के कारण समाज के लिये तो छोड़िये अपने लिये भी कुछ नहीं कर पाते। समाज में ऐसे लोग कभी सम्मान नहीं पाते, बल्कि अपने परिवार में भी हेय दृष्टि से देखे जाते हैं। 18

हमारे सबसे नजदीकी रिश्तेदार पेड़
एक वृक्ष आपके लिए कोई परियोजना नहीं, एक वृक्ष आपका जीवन है।
यह आपके अस्तित्व का बाहरी हिस्सा है। यह हर रोज आपके लिए श्वास लेता है। यह आपके फेफड़ों से कहीं ज्यादा है। आपके फेफड़े पेड़ों के बिना कुछ नहीं कर सकते। हमने देहाती भाइयों को बहुत ही सादे शब्दों में यह बात समझायी, इसके बाद वे जिस उत्साह, लगन और धुन का परिचय देते हैं, वह वाकई उल्लेखनीय है। उन्हें इस रूप में देख कर आनंद आ जाता है। 21

संत-वाणी

माला तो कर में फिरै, जीभि फिरै मुख माँहि।
मनुवां तो दहुं दिसि फिरै, यह तौ सुमिरन नाहिं।।

बोध-कथा

पितरों के लिए दूध

कबीर बचपन से ही असाधारण बुद्धि के धनी थे। कभी-कभी तर्कों से वह अपने गुरु रामानंद को भी सोचने पर मजबूर कर दिया करते थे। कबीर के तर्कों में हमेशा सचाई होती थी जिससे वह गुरु रामानंद के बहुत प्रिय शिष्य बन गए थे। एक बार रामानंद के पितरों का श्राद्ध था। श्राद्ध में पितरों की मनपसंद चीजें बनाने का नियम तो होता ही है। रामानंद के पितरों को गाय का दूध बहुत पसंद था। उन्होंने कबीर को गाय का दूध लाने के लिए भेजा।

रास्ते में एक गाय मृत पड़ी थी। कबीर ने उसके मुंह के आगे घास रख दी और उसके पास बर्तन लेकर खड़े हो गए। भला मृत गाय कहां से दूध देती? कबीर बर्तन लिए वहीं खड़े रहे। उधर श्राद्ध का समय बीतता जा रहा था। जब काफी देर हो गई और कबीर दूध लेकर नहीं लौटे तो रामानंद ने अपने दो शिष्यों को कबीर को देखने के लिए भेजा। जब वह भी बहुत देर तक नहीं लौटे तो गुरु रामानंद स्वयं दूसरे शिष्यों के साथ कबीर को खोजने निकले। मरी हुई गाय के पास कबीर को खड़ा देखकर उन्होंने पूछा- 'यहां क्या कर रहे हो?' कबीर बोले, 'गुरु जी, यह गाय न तो दूध दे रही है और न ही घास खा रही है।' रामानंद ने कहा, 'बेटा, कहीं मरी हुई गाय भी दूध देती है और चारा खाती है?'

गुरु की बात सुनते ही कबीर ने फौरन पूछा, 'महाराज मेरे मन में जिज्ञासा यह है कि जब गाय दूध नहीं दे सकती न ही चारा खा सकती है तो फिर बरसों परलोक सिधारे आपके पिता दूध कैसे पिएंगे?' रामानंद अपने प्रिय शिष्य की इस बात पर निरुत्तर हो गए। उन्होंने कबीर को गले लगाते हुए कहा, 'मुझे पूर्ण विश्वास हो गया है कि तुम एक दिन अपने साथ अपने गुरु का भी नाम रोशन करोगे।'

मौत की घड़ी में दीक्षा!

मैंने सुना है... चर्चिल ने दूसरे महायुद्ध के संस्मरण लिखे हैं... हजारों पृष्ठों में, छह भागों में... किसी युद्ध के इतने विस्तीर्ण संस्मरण लिखे नहीं गये। फिर चर्चिल जैसा अधिकारी आदमी था, जो युद्ध के मध्य में खड़ा था। अक्सर युद्ध करने वाले और इतिहास लिखने वाले और होते हैं। इस मामले में इतिहास लिखने वाला और बनाने वाला एक ही आदमी था। चर्चिल ने अपने हजारों पृष्ठों में रूजवेल्ट, स्टालिन और अपने संबंध में बहुत-सी बातें लिखी हैं। उसमें रूजवेल्ट और चर्चिल दोनों आस्तिक थे, स्टालिन नास्तिक था। और तीनों ने ही हिटलर के खिलाफ युद्ध लड़ा।

हजारों पृष्ठों में खोजोगे, तुम चकित हो जाओगे, सिर्फ स्टालिन कभी-कभी भगवान का नाम लेता है। न तो रूजवेल्ट नाम लेता है, न चर्चिल नाम लेता है। स्टालिन बहुत बार कहता है, अगर भगवान ने चाहा, तो युद्ध में विजय होगी। होना उल्टा था। रूजवेल्ट नाम लेता, चर्चिल नाम लेता भगवान का- दोनों आस्तिक थे। स्टालिन नाम लेता है। रूजवेल्ट, चर्चिल उल्लेख ही नहीं करते भगवान का।

मनोवैज्ञानिक कारण है। स्टालिन दबाये हुए बैठा है। जिसको दबाये हुए बैठे हो, वो उभर-उभर के आयेगा। उससे झुटकारा नहीं हुआ है, दबाने के कारण तुम और उससे बंध गये हो। संकट की घड़ी में बाहर आ जाएगा।

लेनिन ने तो ईश्वर के खिलाफ बहुत बातें लिखी हैं। उन्नीस सौ सत्तरह की क्रांति में जब एक ऐसी घड़ी आ गयी कि इस तरफ या उस तरफ हो जाएगी स्थिति, क्रांति जीतेगी या हारेगी तय न रहा, तो लेनिन ने जो वक्तव्य दिया उसमें उसने तीन बार कहा कि अगर भगवान की कृपा हुई, तो हम क्रांति में विजयी हो जाएंगे। फिर उसने जिंदगी भर कभी नाम न लिया। न उसके पहले लिया था, न उसके बाद में लिया। लेकिन क्रांति की उस दुर्घटना की घड़ी में जैसे होश खो गया, जो दवा पड़ा था वो बाहर आ गया।

माओ उन्नीस सौ छत्तीस में बीमार पड़ा। इस समय पृथ्वी पर बड़े से बड़े नास्तिकों में एक है। और जब बीमार पड़ा तो घबड़ा गया। जब मौत सामने दिखी तो घबड़ा गया। तत्क्षण कहा कि मैं किसी से दीक्षा लेना चाहता हूं, और एक साध्वी को बुला के दीक्षा ली। ठीक हो गया, फिर भूल गया साध्वी को भी, दीक्षा को भी। लेकिन मौत की घड़ी में दीक्षा कितना अद्‌भुत।

प्रस्तुति : निर्मला पुगलिया

पूज्य गुरुदेव के प्रवचन-सारांश

❍ रुचि आनंद

धर्म भी एक तरह की प्यास ही है पर यह जीवन को तृप्त करता है

एक व्यक्ति प्यास से बहुत व्याकुल हो रहा था। उसे पानी की चाह तो थी, लेकिन वह श्रम नहीं करना चाहता था। जब तड़प बढ़ गयी तब उसने जमीन को खोदना शुरू कर दिया। पर पानी कहां मिलेगा, इस ज्ञान के अभाव में निर्जल भूमि पर ही श्रम करता रहा। पानी न मिलने पर कुछ ही देर में वह अधीर हो उठा। फिर उसने दूसरी और तीसरी जगह भी ऐसा ही प्रयास किया, लेकिन उसे पानी नहीं मिला। एक दूसरा व्यक्ति भी था, उसने अपने ज्ञान से भूमि का परीक्षण कर परिश्रमपूर्वक खनन किया। वह तब तक अपने धैर्य से विचलित नहीं हुआ जब तक उसे भूमि पर तैरता हुआ जल दिखाई नहीं दिया। पानी पीकर वह खुद तृप्त तो हुआ ही, बाकी लोगों को भी उसने तृप्त किया। दूसरे व्यक्ति में ज्ञान, क्रिया और निष्ठा का योग था, इसलिए वह सफल रहा।

भगवान महावीर ने जीवन की सफलता के लिए ज्ञान, क्रिया और निष्ठा का होना आवश्यक बताया है। सत्यबोध जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य है। इसकी सिद्धि में ज्ञान और अकर्मण्यता बाधक है। आतुरता भी बाधक है। सत्य को पाने वाले व्यक्तियों का पथ प्रदर्शन करते हुए महावीर ने कहा- सत्य में धैर्य रखो। धैर्य के अभाव में व्यक्ति सत्य के समीप पहुंचकर भी उसे प्राप्त नहीं कर सकता। हमें यह सीखने के लिए वैज्ञानिकों की ओर देखना चाहिए जो खोज तक पहुंचने के लिए कितनी लगन और धैर्य के साथ अपने-अपने काम पर लगे रहते हैं। लेकिन इसके विपरीत अध्यात्मनिष्ठ लोग आंतरिक उपलब्धि के अंतिम छोर पर पहुंचकर अपना धैर्य खो बैठते हैं। यह अधीरता ही अध्यात्म का प्रकाश फैलने-फैलाने में बाधा बन रही है।

महावीर को सत्य की तीव्र जिज्ञासा थी। जब तक उन्हें सत्य की प्राप्ति नहीं हुई, तब तक उन्होंने किसी को सत्य का उपदेश भी नहीं दिया। सत्य की उपलब्धि के बाद भी उन्होंने कभी किसी से यह नहीं कहा कि मैं जो बताता हूं, उसी का अनुसरण करो। उनका स्पष्ट उद्घोष था कि अपने जीवन में सत्य का शोध करो। किसी अन्य के द्वारा शोधित सत्य से भी व्यक्ति लाभ ले सकता है, पर उसी में तृप्ति का अनुभव करना एक तरह से सत्य पर आवरण डालना है।

महावीर एक धर्म-तीर्थ के अनुशास्ता थे। लेकिन वैचारिक आग्रह से वे सर्वथा मुक्त थे। उनके विचारों की उदारता ने कभी यह आग्रह नहीं किया कि आराधना या सत्य की साधना किसी खास वेश-भूषा या संप्रदाय में ही हो सकती है। जो जहां रहे, अपनी साधना धैर्य के साथ करे, लेकिन सजल भूमि की पहचान रखे ताकि पानी सतह पर आ सके। धर्म भी एक प्यास ही है, मगर यह जीवन को तृप्त करता है।

प्रकृति जीवन और जगत में संतुलन स्थापित करती है

एक लेखक और संपादक ने कई सारे सवाल उठाते हुए अपनी पत्रिका में एक निहायत जरूरी बात कही कि 'यह सांस्कृतिक निरक्षरता का जमाना है।' इसकी पुष्टि में आज के पूरे माहौल का चित्रण किया है और कई उदाहरण दिए हैं, जिनसे आप इनकार नहीं कर सकते। उन्होंने एक बड़ी बात कही है कि सांस्कृतिक रूप से निरक्षर व्यक्ति अपनी धारणा को सही और बाकियों की सोच को गलत साबित करने में लगा रहता है।

यह सवाल आज का नहीं, हमेशा से उपस्थित रहा है। किसी भी युग के कालखंड में विचारों और मान्यताओं को थोपने का चलन रहा है। बीसवीं सदी के अंतिम दो दशकों में एक क्या, कई आत्मविभूषित 'महामानवों' ने यह भविष्यवाणी की थी कि प्रलय आने वाला है। जिन्हें जिंदा रहना है, वे उनकी शरण में आ जाएं। उनका पंथ ही जिंदा रह पाएगा। वे मुझे भी पटाने आ गए थे कि ऐसे स्वर्णिम अवसर का फायदा उठाने में पीछे न रहूं। तब मैंने उन्हें कहा था कि सारी सृष्टि का ही अगर प्रलय होने वाला है तो मैं बचकर क्या करूंगा? मैं सृष्टि के साथ ही रहना चाहता हूं, केवल कुछ विशेष देवताओं के साथ नहीं।

समय-समय पर ऐसी भविष्यवाणियों का दौर आता रहता है। कथित संत, पंथ और महामानव अपनी-अपनी दूर की कौड़ी फेंकने से बाज नहीं आते हैं। वे अच्छी तरह जानते हैं कि वे जो प्रचारित कर रहे हैं, उसमें जरा भी सचाई नहीं है। वस्तुतः वे डर के सौदागर हैं और अपनी

सांस्कृतिक निरक्षरता को मारक हथियार बनाने में माहिर होते हैं।

लेकिन हमें एक बात समझनी चाहिए कि प्रलय भले न आए, विनाश की जो आशंका खड़ी हुई है, उससे भाग पाना मुश्किल है। प्रलय और विनाश के बीच एक स्पष्ट अंतर है। प्रलय का सीधा संबंध प्राकृतिक आपदाओं से होता है जबकि विनाश का संबंध स्वयं मनुष्य के अपने कार्यकलापों से है। मनुष्य अपनी निरंकुश हरकतों से विनाश को निमंत्रण दे रहा है। विश्व के सभी राष्ट्र शक्ति-संतुलन के नाम पर विनाशकारी अंधी दौड़ में लगे हैं। राष्ट्रवाद के नाम पर पूरे संसार में उग्रवाद और आतंकवाद का विस्तार हो रहा है। संप्रदायवाद और मजहबी उन्माद से उठने वाली आग की लपटें आदमी को पूरी तरह निगल जाना चाहती हैं। औद्योगिक क्रांति के नाम पर आदमी, पशु-जगत, वनस्पति- जगत, नदी-नाले, पर्वत, जंगल आदि प्राकृतिक संपदा को लूटने में लगा है मशीनी सभ्यता ने जीवन-धारण के लिए आवश्यक प्राणदायी पर्यावरण पर ही सीधा प्रह्मर कर दिया है।

क्या यह सब स्वयं आदमी द्वारा अपने ही विनाश का आमंत्रण नहीं है? क्या यह किसी प्राकृतिक प्रलय से अधिक चिंताजनक नहीं है समय और युग कोई भी हो चिंता इन वर्षों आदमी की निरंकुश सोच की है जो एक अराजक संस्कृति को जन्म दे रही है। परिणामतः एक ऐसी मानसिकता फलती-फूलती जा रही है जो अपने सिवाय किसी के भी सहन करना नहीं चाहती है। महाप्रलय और महाविनाश को लाना या टालना आदमी के हाथों में है। प्रकति के हाथों में नहीं। प्रकृति तो जीवन और जगत में उत्पन्न असुंतलन को दूर करती है, उसमें फिर से संतुलन लाती है। महाविनाश और महानिर्माण के लिए जिम्मेदार हम है, दूसरा कोई नहीं, प्रकृति भी नहीं।

अनमोल विचार

जिस क्षण मैंने यह जान लिया कि भगवान हर एक मानव शरीर रूपी मंदिर में विराजमान है, जिस क्षण मैं हर व्यक्ति के सामने श्रद्धा से खड़ा हो गया ओर उसके भीतर भगवान को देखने लगा- उसी क्षण मैं बन्धनों से मुक्त हूं, हर वो चीज जो बांधती है नष्ट हो गयी, और मैं स्वतंत्र हूं।

-स्वामी विवेकानंद

चमत्कार को नमस्कार

❍ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

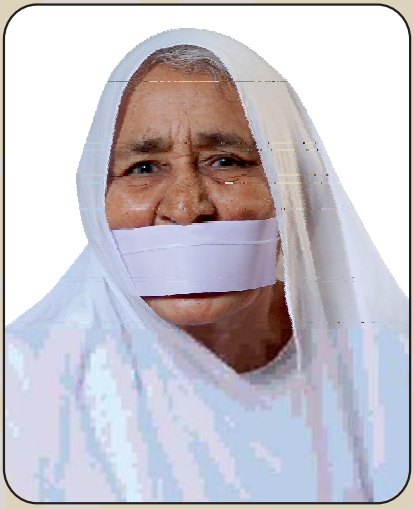

पुराने जमाने का प्रसंग है। राजा श्रेणिक के शासन काल में एक बार चोर का बड़ा भारी आतंक छा गया। लोग देश को छोड़ अन्यत्र जाने लगे। यह राजा के लिए बहुत बड़ी चुनौती थी।

जहां अन्यान्य चोर रात को चोरी करते हैं वहां आंजनेय नाम का चोर दिन दहाड़े लोगों की दूकानों से और मकानों से लाखों का माल लूट कर ले जाता लेकिन किसी को कुछ पता नहीं चलता। जनता बुरी तरह परेशान हो गयी। राजा ने सिपाही कोतवाल आदि सभी की डयुटी लगाई लेकिन सफलता नहीं मिली।

एक दिन राजा श्रेणिक सभा में उदास बैठे थे। तभी महामात्य अभय कुमार ने निवेदन की भाषा में कहा- महाराज! हम सचिवों के रहते आपको चिन्तातुर रहने की क्या आवश्यकता। सेवक आप के समक्ष हाजिर है फरमान करें क्या समस्या है? राजा श्रेणिक ने महामंत्री से कहा अभय कुमार! यह मसला तुम्हारे वश का नहीं है। तुम अपने उर्वर दिमाग से चिन्तन मन्थन करके किसी समस्या का समाधान निकाल सकते हो लेकिन चोर को पकड़ना तुम्हारे वश का काम नहीं है। अभय कुमार ने अपने सर्वांगीण सामर्थ्य का वखान किए बिना सहज भाव से निवेदन किया महाराज! आपके सामने कोई संकट या उलझन हो और हम उसका हल न निकाल सकें तो हमारा मंत्री बनना ही बेकार।

मंत्री अभय कुमार को उत्साहित देखकर महाराज कुछ आश्वस्त हुए और मंत्री को समझाते हुए कहा- महामंत्री! अभी कुछ अर्से से हमारे राज्य में एक चोर का भारी उपद्रव है। पूरे शहर में पहरेदारी की सजग व्यवस्था होते हुए भी चोर चोरी करने में सफल हो जाता है और आश्चर्य की बात तो यह है कि अन्यान्य चोर जहां रात को आधी रात के अंधेरे में चोरी करते हैं वहां यह चोर दूकानदारों के बैठे हुए दूकान से,

तिजौरियों से माल ले जाता है किसी का दृष्टि गोचर नहीं होता। अदृश्य रहता महामंत्री अभय कुमार को अपनी तत्कालोत्पन्न बुद्धि पर विश्वास था। उसने कहा महाराज! अभय कुमार नगर के चौर्योपद्रव को अगर खत्म नहीं कर सका तो मगध देश को अपना मुंह नहीं दिखाएगा यह उसकी प्रतिज्ञा है।

महाराज अभय कुमार के दृढ़ संकल्प से आश्वस्त हुए लेकिन भूखे को जब तक भोजन न मिले तसल्ली नहीं होती। महाराज श्रेणिक प्रतीक्षातुर दशा में सभा विसर्जित कर महलों में पधार गए। इधर अभय कुमार की प्रबल घोषणा जन-जन के कानों में पहुंच गयी। शहर के मध्य घूमते हुए आंजनेय चोर ने भी महाराज श्रेणिक का आह्वान और अभय कुमार की घोषणा सुनी। उसने निर्णय किया कि आज मुझे राजमहलों में ही चोरी करना है। देखता हूं महाराज और उनका महामात्य मेरे को कैसे पकड़ते हैं।

महाराज श्रेणिक महलों में मध्यान्ह भोजन करने बैठे तो बिना खाए ही थाल साफ हो गए और महाराज भूखे पेट ही बैठे रहे। इस बात की खबर जब अभय कुमार के पास पहुंची तो वह तत्काल चलकर महलों में आया और अनुमान से जान लिया कि यह सारी उस चोर की करामात है। अभयकुमार ने तुरन्त महलों के गेट बन्द करा लिए और अन्दर ऐसी आग जलाई कि महल धुंए से भर गया। महल में जो जो थे सबकी आंखों से आंसुओं की धारें बहने लगी। उस समय आंजनेय चोर भी महाराज के महल में था सो उसकी आंखों में भी आंसूधार बहने लगी। आंशुओं की धार के साथ ही उसकी आंखों में आंजा हुआ अंजन साफ हो गया और अंजन साफ होते ही वह सबके सामने प्रकट हो गया। क्योंकि उस अंजनमयी दवा की ही वह करामात थी कि जो उस अंजन को आंज लेता है वह लोगों की दृष्टि में अदृश्य हो जाता है। महामंत्री अमयकुमार ने यही अटकल लगायी थी कि जरूर वह चोर आंखों में कोई ऐसा अंजन आंजकर आता है जिससे वह किसी को दिखाई नहीं देता। मुझे सबसे पहले उसकी आंखों का अंजन साफ करना है। यही चोर पकड़ने का कारगर तरीका हो सकता है। जब अभय कुमार की चाल सफल हो गयी और चोर सबके समक्ष प्रकट हो गया तो राजा के सैनिकों ने उसे बन्दी बना लिया और अभय कुमार अपनी घोषणा को क्रियान्वित करने में सफल हो गए व देश का भयंकर उपद्रव शांत हो गया। अब अभय कुमार से ईष्या करने वाले मंत्रियों की आंखें खुली कि अभयकुमार को सर्वत्र अधिक सम्मान क्यों दिया जाता है। चमत्कार को नमस्कार है।

हंस अकेला

{उपन्यास-शैली में आचार्यश्री रूपचन्द्र की जीवन-गाथा}

○ डॉ. विनीता गुप्ता

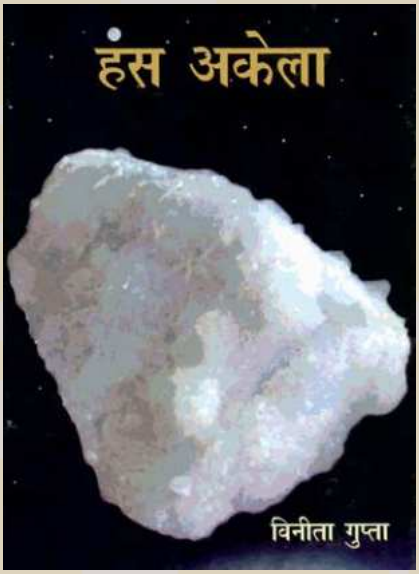

गतांक से आगे-

यही सोचते-सोचते कब मुनि जी के चरण भगवान महावीर और बुद्ध की प्रभाव भूमि राजगीर में पड़े, उन्हें पता ही न चला।

नजर उठायी तो सामने प्रकृति का अनुपम विस्तार दिखाई पड़ा। चारों ओर ऊँची-ऊँची पहाड़ियां, मानो द्वारपाल की तरह राजगीर की रक्षा में तैनात हों। एकदम सामने था विपुल गिरि। मुनि जी के कदम आगे बढ़ते जा रहे थे। पहाड़ों पर कहीं कोई हरीतिमा नहीं, बल्कि वज्र से कठोर पत्थर अपनी ताकत का अहसास करा रहे थे। कुछ ही देर में मुनि जी अपने तीन सहयोगियों मनक मुनि, विजय मुनि और अशोक मुनि के साथ ऐतिहासिक, धार्मिक नगरी राजगीर पहुँच गये। महाभारतकालीन घटनाओं से जुड़ी यह भूमि भगवान महावीर और भगवान बुद्ध की साधना स्थली रही है। भगवान महावीर ने तो अपने जीवन काल के चौदह चातुर्मास यहां बिताये थे मुनि जी अपने जीवन की शेष अवधि यहीं ध्यानस्थ पाँच पहाड़ियों- विपुल गिरि, सोन गिरि, रत्न गिरि, उदयगिरि और वैभार गिरि के बीच अध्ययन, चिंतन, मनन और साहित्य-सृजन में लगा देने के लिए पहुँच गये थे।

पहाड़ियों के पीछे से सूर्य मुनि जी की अगवानी करने के बाद छुपने की तैयारी में था। मुनि जी के कदम और तेज हुए। उन्होंने राजगीर, जिसे राजगृही भी कहा जाता था, को घेरने वाली चालीस किलोमीटर दूर तक फैली पत्थर की मोटी दीवार से नगर में प्रवेश किया। उन्हें सूर्यास्त से पहले नगर के बीचों-बीच घनी बस्ती में स्थित श्वेताम्बर जैन लाल मन्दिर पहुँचना

था। जिसे कुछ लोग इसे नौलखा मन्दिर के नाम से जानते थे। बीस मिनट में वे लाल मन्दिर पहुँच गये।' उन्होंने मंदिर में प्रवेश किया और भगवान महावीर की छवि को निहारते हुए वज्रासन पर बैठ स्तुति करने लगे-

'महावीर स्वामी, नयन पथगामी, भवतु मे...' पाँच मिनट पूजा-अर्चना के बाद जयंती बाबू और मंजू बाई जैन सहित कई अन्य श्रावक उन्हें सामने बनी श्वेताम्बर जैन कोठी धर्मशाला में ले गए। लम्बे विहार के बाद आहार ग्रहण किया। चारों मुनियों को आहार करते देख दम्पत्ति को बहुत संतोष हो रहा था। विशाल धर्मशाला में सौ से अधिक कक्ष थे, लेकिन मुनि जी के लिए व्यवस्था वहीं पीछे धर्मशाला के एक हिस्से, अतिथि भवन में थी। आहार के बाद धर्मशाला की सीढ़ियां उतरते हुए मुनि जी ने देखा सामने पहाड़ी पर सूर्य अपना पिटारा समेटने की तैयारी में है। लाल मंदिर लाल सूरज की लालिमा से रक्ताभ हो उठा था। मुनि जी सीढ़ियां उतरकर गौशाला पार करते हुए अपने स्थान पर पहुँचे। अतिथि भवन की उस इमारत के बीचों बीच घने वृक्षों से आच्छादित दो-तीन कमरों में ज्ञान राशि का भंडार था। वह दरअसल पुस्तकालय था। पुस्तकालय के बाहर चबूतरा था और चबूतरे पर वृक्ष की छाया। चबूतरे पर बैठें तो सामने पसरा काफी बड़ा खाली स्थान। नजर उठाएँ तो जाकर सीधे बड़ी धर्मशाला के कमरों की पीठ पर टिक जाती।

मुनि जी के लिए पहली मंजिल के एक फ्लैट में ठहरने की व्यवस्था थी। तीन कमरों वाले साफ-सुथरे फ्लैट के पहले कमरे में मुनि जी ने अपना आसन लगा लिया। कमरे की खिड़की खोली तो बस्ती के घर ही घर नजर आ रहे थे। खिड़की के ठीक सामने छत पर कैक्टस मुस्करा रहा था। शाम ढल चुकी थी, लेकिन हवा में अभी भी जेठ माह की दुपहरी का ताप बाकी था। राजगीर की पहाड़ियों के तप जाने से यहां गर्मी कुछ ज्यादा रहती थी। दिनभर लू के थपेड़ों से जूझने के बाद इस कक्ष में पहुँच कर मुनि जी को राहत मिली। बस, यही है उनके भावी अध्ययन चिंतन-मनन और सृजन की स्थली।

मुनि जी ने खिड़की से आकाश की ओर देखा। सूरज का कहीं नामो-निशान नहीं था। धीरे-धीरे वह अपना उजाला भी समेट चुका था। मुनि जी ध्यान में बैठ गए।

वे अब तक जैन आगमों, श्रीमद् भगवदगीता, वेद-उपनिषदों, षड्-दर्शन संग्रह आदि का अध्ययन कर चुके थे। बौद्ध शास्त्रों पर भी उनका अध्ययन हो चुका था। कुछ दिन पहले उन्होंने कुरान पढ़ी थी।

इस्लाम से सम्बधित पुस्तकों का अध्ययन किया था। उनके मन में बाइबिल और वर्तमान शताब्दी में लोकप्रिय हो रहे कार्लमार्क्स के साम्यवाद को पढ़ने की इच्छा थी। बाइबिल का हिन्दी अनुवाद आसानी से मिल गया। लेकिन साम्यवादी दर्शन का मूल ग्रंथ 'दास कैपिटल' उपलब्ध नहीं हो रहा था। इस बारे में उन्होंने अपनी इच्छा श्री 'अग्निमुख' के समक्ष व्यक्त की। उन्होंने इसकी व्यवस्था करने का वचन दिया। श्री भानी राम वर्मा मुनि जी की जन्म-स्थली सरदारशहर के ही थे। मुनि जी को पता चला था कि बचपन के दस-बारह वर्ष वे अवसाद की अवस्था में थे। उन्हें मिरगी के दौरे पड़ा करते थे। लेकिन बाद में न केवल वे शारीरिक-मानसिक रूप से स्वस्थ हो गए, अपितु ज्ञानार्जन का लक्ष्य साधने में उनके अंतर्चक्षु खुल गए थे। उनकी स्मरण-शक्ति अद्‌भुत थी।

एक दिन सुबह-सुबह भानी राम वर्मा आये। मुनि जी ध्यान आदि साधु-चर्या से निवृत्त हो कुछ लिखने की मुद्रा में थे। अचानक श्री भानी राम के आ जाने से विचार शृंखला टूट गई। मुनि जी को नमन करने के बाद उन्होंने शुभ सूचना दी-

'मुनि जी 'दास कैपिटल' मिल गई।' मुनि जी को पुस्तक सौंपते हुए उनके चेहरे पर विजयी भाव झलक रहा था। ज्ञान पिपासु मुनि जी ने पन्ने पलटे और फिर पुस्तक को एक तरफ रख दिया। खिड़की से आ रही धूप की किरणें सीधे 'दास कैपिटल' पर पड़ रही थीं।

कुशलक्षेम के बाद भानी राम जी बोले-

'मुनि जी आज मैं जल्दी में हूं। कुछ जरूरी काम है। आपको पुस्तक देने का उतावलापन मैं छुपा नहीं सका और सीधा चला आया। अभी आज्ञा लेता हूं। फिर चर्चा करूंगा। मेरे मन में तमाम जिज्ञासाएं हैं... अब आज्ञा दें मुनि जी...।'

भानी राम जी जैसे तेज झोंके की तरह आए थे वैसे ही लौट गए। आज मुनि जी को कहीं जाना नहीं था। उन्होंने 'दास कैपिटल' पढ़ने का मन बना लिया। आधा घंटा बाद उन्होंने पढ़ना शुरू कर दिया।

x x x

पाँच दिन तक 'दास कैपिटल' में मार्क्स के दर्शन का अवगाहन करते हुए मुनि जी ने बहुत कुछ अनुभव किया। उन्होंने मार्क्सवाद का वैदिक, जैन और बौद्ध दर्शनों की तुलना में आकलन शुरू किया, बुर्जुआ, समानता, संघर्ष, रोटी, पैसा, पूँजीवाद, शोषण, शोषित की बात करने वाले आधुनिक मार्क्सवाद की व्याख्या जब उन्होंने महावीर वाणी के संदर्भ में की, तो विचारों का ज्वार-सा उमड़ पड़ा। उधर जून-जुलाई की तपती दोपहरी, इधर

विचारों का ज्वार...। मुनि जी ने कलम निकाली और ज्वार को कागज पर उतारना शुरू कर दिया-

'कोई भी दर्शन या विचार नया अथवा पुराना नहीं होता। हजारों वर्ष पूर्व प्लेटो की 'रिपब्लिक' में समाजवादी समाज एवं राष्ट्र-रचना की रूपरेखा मिलती है। उससे भी पूर्व भगवान महावीर ने हमारे सामने सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन का एक आदर्श रखा था।

अर्थव्यवस्था के दो पक्ष होते हैं- पूँजी और श्रम। इनमें भी सर्वोच्च स्थान श्रम का है। महावीर ने श्रम को जितनी बड़ी प्रतिष्ठा दी, उतनी शायद ही मार्क्स दे पाया हो। उन्होंने कहा है- 'जो श्रम करता है, वही श्रमण है। संत है।' 'श्रम ही साधना'- यह बात संसार में विचारक टालस्टॉय कह पाये थे, जिसे रूस की जनता साम्यवाद का प्रणेता मानती है। उससे भी पूर्व महावीर ने श्रम को इतनी प्रतिष्ठा दी थी।

श्रम का जो उद्योगमय रूप है। उसके बारे में महावीर का विचार वही है जो रस्किन, टालस्टॉय, और गांधी जी का रहा है। महावीर ने श्रावक के लिए कल-कारखानों का वर्जन किया है, क्योंकि वे हिंसा के केन्द्र हैं। उनसे सम्पत्ति का केन्द्रीकरण होता है, बेकारी बढ़ती है। इसलिए उन्हें महा-आरंभ, महा-परिग्रह कहकर महावीर अपनी साधना-पद्धति में इनका निषेध करते हैं। गांधी और रस्किन का विचार लगभग यही है। इनके स्थान पर महावीर ने छोटे-छोटे उद्योगों को अपने दर्शन में स्थान दिया। जिससे अल्प-आरम्भ, अल्प-परिग्रह, धन का विकेन्द्रीकरण, आर्थिक समता तथा क्षेत्रीय स्वावलम्बन स्वयं निष्पन्न होते हैं। छोटे उद्योगों में भी शोषण न हो, इसके लिए महावीर ने सजगता बरतने का निर्देश किया। सम्भवतः महावीर ही एकमात्र व्यक्ति थे, जिन्होंने पशु पर अधिक भार न लादने तक का निर्देश श्रावकीय आचार संहिता में दिया। मानवीय शोषण को तो उन्होंने प्रायश्चित्त योग्य बड़ी हिंसा कहा है।

'समाजवाद का जो रूप भारत में स्थापित होकर यहां के लोक जीवन के लिए वरदान बन सकता है। वह ग्राम-राज्यमूलक, लघु एवं कुटीर उद्योगों द्वारा क्षेत्रीय स्वावलंबन पर आधारित, गांधी और महावीर का अहिंसा, प्रेम एवं करुणामय भारतीय समाजवाद होगा, प्रिंस क्रोपोट्किन का अराजकतावादी अथवा मार्क्स का वर्ग-संघर्षवादी समाजवाद नहीं, क्योंकि वे अपूर्ण एवं अधूरे तो हैं ही, इस देश की परिस्थितियों एवं परिवेश के विपरीत भी हैं।

गांधी जी ने ट्रस्टीशिप का आदर्श रखा, जो भारतीय समाजवाद का आधार है।

महावीर ने इसी का स्वामित्व-विसर्जन के रूप में विधान किया। वह ट्रस्टीशिप से भी गहरा जाता है। स्वामित्व-विसर्जन का सीधा अर्थ है- वस्तु से अपना स्वामित्व हटा लेना। जीवन के साधनों में सब समान हिस्सा रखते हैं। कोई उनका एकमात्र स्वामी नहीं है। हर व्यक्ति मात्र संरक्षक है। जो अपनी अपेक्षा के अनुसार योगक्षेम के साधन ले, शेष औरों के लिए छोड़ दे, जिनको आवश्यकता है। महावीर कहते हैं- अपनी आवश्यकता के लिए लेने से पूर्व यह देख लो कि क्या इससे कम में भी मेरा काम चल सकता है? क्या इससे दूसरे की आजीविका का विच्छेद तो नहीं हो जाएगा? इन परिस्थतियों में वह अपनी आवश्यकताओं को और कम करके शेष सम्पत्ति से अपना स्वामित्व हटा ले। स्वामित्व-विसर्जन तभी हो सकता है जब अपनी आवश्यकताएं सीमित हों।

महावीर शोषण-मुक्त व्यवसाय से प्राप्त आय को भी व्यक्ति की अपनी आय नहीं मानते। विसर्जन स्वामित्व का अस्वीकार है और स्वामित्व अहं का विस्तार। स्वामित्व टूटने पर आवश्यकता-पूर्ति बचती है, जिसे उपभोग-परिभोग-परिमाण-व्रत द्वारा महावीर अधिकाधिक सीमित करते जाने का निर्देश देते हैं। श्रावक की तीन मनोकामनाओं में सर्वप्रथम है कि मैं अल्पतम आरम्भ और अल्पतम परिग्रह पर कब पहुँच सकूंगा! पूर्ण अपरिग्रह यानी स्वामित्व का सम्पूर्ण विसर्जन महावीर का मूल आदर्श है। जहां विषमताओं एवं शोषण का बीज समाप्त हो जाता है।

उपभोग-परिभोग-परिमाण-व्रत एक प्रकार से आय का स्वैच्छिक परिसीमन है, जो व्यक्ति और समाज को स्वतः समाजवाद की ओर ले जाता है। यह दुर्भाग्य का विषय रहा है कि महावीर को गत ढाई हजार वर्षों में हमारे देश ने समझने और अनुसरण करने का प्रयास नहीं किया। अन्यथा देश में एक महान रक्तहीन आर्थिक क्रांति होती। हमारे सामाजिक-आर्थिक तंत्र का समाजवादी आधारों पर नवनिर्माण कभी का हो जाता।'

एक ही बैठक में मुनि जी ने महावीर और समाजवाद को व्याख्यायित करते हुए लेख पूरा कर दिया। लेख पूरा होते-होते शाम पाँच से ज्यादा बज गए थे। यह आहार का समय था।

x x x

-क्रमशः

हंस अकेला- एक अनुपम जीवन-गाथा

○ पी. एस. सुराणा

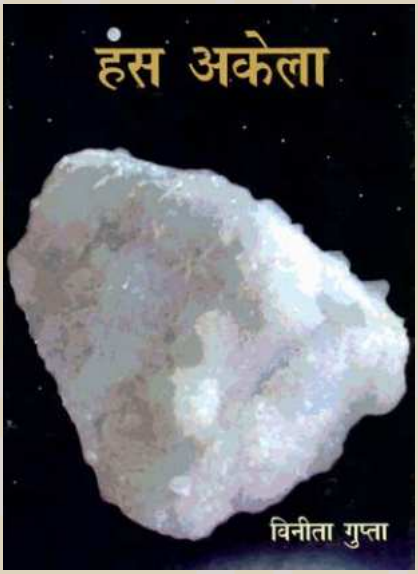

आपश्री के पावन करकमलों द्वारा प्रेषित पुस्तक ''हंस अकेला'' श्री तरुणजी बोहरा के माध्यम से प्राप्त हुई। यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे इस रोचक, प्रेरणादायक, हृदयस्पर्शी, पुस्तक का स्वाध्याय करने का अवसर मिला। आपश्री को अंतर्मन से धन्यवाद।

धन्यवाद की पात्र विदुषी लेखिका विनीताजी गुप्ता भी हैं, जिन्होंने आपश्री के जीवंत अनुभवों के मोतियों को अपनी विशेष लेखनी के धागे में पिरोकर एक अनुपम माला का रूप प्रदान किया। विनीताजी गुप्ता एक श्रेष्ठ लेखिका तो हैं ही, साथ ही उनकी कल्पना शक्ति और शब्दों के बीच का सामंजस्य अतुलनीय है, यह इस पुस्तक से निर्विरोध सिद्ध होता है।

''हंस अकेला'' यह शीर्षक पाठक के मन में एक ऐसा अलग सा रोमांच पैदा कर देता है, जो पुस्तक के अंतिम पृष्ठ तक कायम रहता है। सम्पूर्ण पुस्तक अनेक प्रेरणाओं से संयोजित है, किन्तु विशेष रूप से पुस्तक में चरित्रनायक यानि आपश्री के प्रकृति प्रेम के अध्याय पाठक के मन में दिलोदिमाग पर, गहरी छाप छोड़ देते हैं। बात चाहे चरित्रनायक के अनंत आकाश में विचरण की असीम अभिलाषा की करें या प्रकृति के अद्वितीय सौंदर्य से आकर्षित हो नव उत्साह से प्रगतिशील होते उनके कदमों की करें... सब कुछ अलौकिक प्रतीत होता है।

अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशक ''वाणी प्रकाशन'' को वीणा की देवी सरस्वती के साक्षात पुत्र चरित्रनायक के सशक्त जीवन को प्रकाशित न करने का कोई भी कारण मिलना असंभव साबित हुआ होगा। और परिणाम स्वरुप सुन्दर आवरण व उच्चतम गुणवत्तायुक्त पुस्तक पाठकों तक पहुंची है। पुस्तक की

शुरुआत में ही, साहित्य आकादमी से पुरस्कृत, ख्यातनाम लेखिका चित्रा मुदगल की पंक्तियाँ पाठक को अविलम्ब पुस्तक को पढ़ने को सहर्ष मजबूर कर देती है।

जैन इतिहास में, विशेषकर चौथे आरे में कई सौभाग्यशाली माताओं ने स्वपन में सिंह को अपनी कुक्षि में अवतरित होते देखा और फलस्वरूप उन्होंने सिंह समान पराक्रमी व निर्भय पुत्ररत्न को जन्म दिया। ऐसे धर्मसिंहों ने जिनशासन की महान प्रभावना कर अपने सिंहत्त्व को सार्थक किया। शायद ही किसी ने सोचा होगा कि इस हुंडा अवसर्पिणी काल के पांचवे आरे में भी सिंह का स्वपन देखनी वाली चंद माताओं में पाँची देवी भी एक होगी। रत्नकुक्षिधारिणी पाँची देवी की पाँचवी संतान और अपने पिता जयचंदलाल का यह लाल सिर्फ सरदारशहर का नहीं बल्कि संयम का सरदार बनेगा, यह बात या तो विशिष्ट ज्ञानी महापुरुषों के ज्ञान में दर्शित हो रही थी, या फिर पितामह भीखमचंदजी के द्वारा बनवाई गई ज्योतिषी की कुंडली के सुनहरे अक्षरों में।

जैसे आकाश में चन्द्र का रूप सोलह कलाओं से विकसित होता है, वैसे ही बालक रूपचन्द्र बचपन के पंखों पर आकाश की सैर करने को तत्पर था, किन्तु प्रकृति ने भी कठोरतम परीक्षा ली। बालक रूपचंद्र पर मरणान्तक कष्ट उत्पन्न हुआ और धरती पर लेटा दिया गया, अंतिम साँस के लिए। लेकिन जो खुले आकाश की अमानत है, धरती भला उसका आलिंगन कैसे कर सकती है? वैद्यराज की औषधि बालक रूपचंद्र के लिए वैसे ही संजीवनी बन गई, जैसे वीर हनुमान द्वारा लाई गई संजीवनी पराक्रमी लक्ष्मण को नवजीवन प्रदान करती है।

प्रकृति द्वारा न तो साँसों पर रोक लग पाई और न ही बालक रूपा के सपनों की ऊँची उड़ान पर। जैसे कि बालक रूपा कह रहा हो-

"जो देखना चाहते हो मेरी उड़ान को,
तो जरा सा ऊँचा और करो इस आसमान को"

कभी पतंग के माध्यम से तो कभी कल्पनाओं के माध्यम से क्षितिज की ऊंचाई का अनवरत आनंद बालक रूपा को मिल रहा था। अनुशासन की तर्ज पर पतंग उड़ाने पर पाबंदी क्या लगी, उड़ान का रुख ही बदल गया। संत महापुरुषों से समागम से चिंतन के सागर में वैराग्य की लहरें हिलोरे लेने लगी। माता की ममता, पिता का वात्सल्य, परिवार का प्रेम, सभी कुछ बहुत मूल्यवान किन्तु सोने का पिंजरा भी उसे कहाँ सुहाता है, जिसे उड़ने की तीव्र अभिलाषा हो इस उड़ान को प्रगति मिली स्वयं आचार्य तुलसी के पावन सानिध्य में

दीक्षित होकर। बालक रूपचन्द्र अब बालमुनि रूपचन्द्र के रूप में प्रतिष्ठित हो चुके हैं। विराट गुरू के सानिध्य में नन्हें कदम बढ़ रहे हैं सम्पूर्ण आर्यावर्त में अहिंसा का शंखनाद करने के लिए। संयम जीवन के स्वाभाविक कष्टों की ज्वाला भी संयम के आनंद की बारिश से निरंतर शांत होने लगी और प्यास बढ़ने लगी आत्म आनंद का अनुभव करने के लिए। भाव भी शब्दों के रूप में निखरने लगे, अनेक कविताओं की रचना, जन जन को तुप्त करने लगी है।

गुणीजनों का पूर्ण सम्मान करते हुए उनके गुणों को ग्रहण व आत्मसात कर, स्वयं के जीवन को विकसित करने का गुण, कोई विरले जिज्ञासुओं में ही होता है। मुनि रूपचंद्र के इसी गुण से उनको, सेवा की प्रतिमूर्ति मदर टेरेसा, आचार्य रजनीश 'ओशो', महादेवी वर्मा, जे. कृष्णमूर्ति, आनंदमयी माता, राष्ट्रपति ज्ञानी जेलसिंह जैसे अनेक गुणीजनों एवं प्रबुद्ध चिंतकों से मुलाकात का सुखद संयोग निर्मित हुआ। आपश्री ने अवसर का भरपूर सदुपयोग करते हुए उपरोक्त विभूतियों से आकर्षित होते हुए, उनके साथ खूब चिंतन-मनन किया और उन सभी को स्वयं के प्रति सहज आकर्षित भी किया। विशेष रूप से आचार्य रजनीश 'ओशो' के साथ आपश्री की मुलाकात और वार्तालाप का प्रसंग रोमांचक स्थिति उत्पन्न करने वाला है बड़े-बड़े पंडित भी जिनके सामने खड़े रहने में कांपते थे, ऐसे सिर्फ भारत के ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व के बीसवीं सदी के वरिष्ठ दार्शनिक ओशो के सामने बैठकर, उनकी नजरों में नजरें डालकर, उनके प्रश्नों का निष्पक्ष भाव से उत्तर देना और अकाट्य प्रति प्रश्नों को रखना आपश्री की सिंह स्वरूपी निर्भयता को दर्शाता है।

जानने की तीव्र अभिलाषा आपश्री की लम्बी पदयात्राओं को भी सुखद बना रही थी। क्या कन्याकुमारी, क्या कलकत्ता, क्या नालंदा क्या नेपाल, जिधर-जिधर भी कदम बढ़े, कारवां बनता गया। कदम धरती पर और निशान भक्तों के दिलों में अमिट छाप छोड़ते चले गए। अनेक भाषाओं में आपकी कविताओं का, पुस्तकों का, प्रकाशन आपकी लोकप्रियता की सीमाओं को लांघकर राष्ट्रीय से अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुँच गया। विदेश की धरती भी आपके कदमों से पावन हुई और अहिंसा व नैतिकता से पूर्ण आपश्री के प्रवचनों की गूंज अनेक राष्ट्रों में सुनाई देने लगी।

लाखों भक्तों के दिलों में राज करते हुए भी अपनी अंतरात्मा के समीप रहना यह बहुत बड़ी साधना है और आपश्री ने न सिर्फ इस साधना के रहस्य को समझा

बल्कि ऐसी साधना को साधने में कामयाब भी हुए। मानव मंदिर मिशन आपकी अनुकम्पा भावना का जीवंत उदाहरण है। प्रत्येक जीव के साथ अपनत्व के बिना, प्रत्येक मानव के साथ मानवता का व्यवहार अपनाएं बिना, प्रभुता की प्राप्ति असंभव है, यह आपश्री ने अपने जीवन में प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से सम्पादित किया है।

सम्प्रदायवाद का जहर हलाहल विष से भी ज्यादा विषैला है, इस तथ्य को आपश्री ने अपने संयम जीवन में भी अनुभव किया और आपश्री का यह अनुभव दर्द बनकर आपकी रचनाओं में भी झलकता है। अपार दर्द के अनुभव में भी, मुस्कुराते हुए आगे बढ़ना आपश्री के जीवन का अनुपम गुण है। अभी तक की जीवन यात्रा में जहाँ आपश्री को अनेक आनंद के पल हासिल हुए, वहीं अनेक कष्टों से भी साक्षात्कार हुआ। लेकिन आपश्री ने सभी बाधाओं को समभाव से पार किया क्योंकि आपके हौसलों का कद उन सारे कष्टों के कद से कहीं ज्यादा ऊँचा रहा ...

"कह दो इन आसमानों से,
अरमान अभी रूठे नहीं।
पंख जो टूटे तो क्या,
हौसलें अभी छूटे नहीं"।।

कुल मिलाकर हंस अकेला पढ़ने के बाद ऐसा महसूस हुआ कि जैसे मानसरोवर में एक श्वेत, उज्जवल, आकर्षक सा हंस सहजता से मोतियों को ग्रहण कर रहा है, वैसे ही आपश्री अपनी उज्जवल भावनाओं सहित इस संसार सरोवर से सार रूप में गुणों को ग्रहण कर अपने जीवन को पूर्ण सार्थक कर रहे हैं।

लिखना तो बहुत कुछ चाहता हूँ, लेकिन आपश्री के अम्बर से भी ऊँचे अस्तित्व और हिमालय सरीखे विराट व्यक्तित्व के सामने मेरा शब्दकोष अति लघु साबित हो रहा है। पुनश्च आपश्री के उत्साह, क्षयोपक्षम, गुणग्राहिता, सरलता, सहजता इत्यादि गुणों की अनुमोदना करता हूँ।

अभी वर्तमान में भी आपकी जैन सिद्धांतों की पवित्र ध्वजा को पूर्ण विश्व में फहराने हेतु अमेरिका की प्रवास यात्रा पर है। आपश्री इसी तरह अहिंसा भगवती की प्रभावना में, जिनशासन की जाहोजलाली में स्वस्थ रूप से बढ़ते रहें एवं आपश्री के पावन जीवन से, हर इंसान प्रेरणा पाते हुए, अपने चरम लक्ष्य को पाने हेतु कदम बढ़ाये, ऐसी मंगल भावना भाता हुआ अपने शब्दों को विराम देता हूँ।

इंटरनेशनल लॉ सेन्टर
61-63, डॉ. राधाकृष्णनन सलाई,
मायलापुर, चेन्नई-600 004 (भारत)

परिश्रम पाता है सम्मान

समाज में सम्मान उन्हीं लोगों को मिलता है, जो परिश्रम और सृजनात्मकता के माध्यम से लोगों के सम्मुख अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। हर कोई ऐसे व्यक्तित्व के धनी लोगों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता है। हर कोई उनके ही गुणों, कर्मों इत्यादि का उदाहरण सबको देते हैं। वहीं हमारे बीच में कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो अपने आलस्य के कारण समाज के लिये तो छोड़िये अपने लिये भी कुछ नहीं कर पाते। समाज में ऐसे लोग कभी सम्मान नहीं पाते, बल्कि अपने परिवार में भी हेय दृष्टि से देखे जाते हैं। एक किसान स्वभाव से ही आलसी था। वह थोड़ी देर काम करता और फिर घर लौट आता। इस वजह से उसकी पत्नी न तो उसके भोजन आदि का ध्यान रखती और न ही आत्मीयतापूर्ण व्यवहार करती। मन ही मन ये बात किसान को कचोटा करती थी। उसने अपने एक मित्र को अपने मन की ये बात बताई तो उसके मित्र ने एक उपाय बताया। अगले दिन किसान प्रातःकाल से ही खेत पर चला गया और कठिन परिश्रम में लग गया। दोपहर बीत जाने पर उसने देखा कि उसकी पत्नी उसके लिये भोजन लेकर आ रही हैं। भोजन लेकर आई पत्नी ने किसान से कहा कि स्वामी! आप थक गए होंगे। आइये, भोजन कर लीजिए किसान ने आश्चर्य से पूछा कि आज इतना प्रेम व्यवहार कैसे? उसकी पत्नी ने उत्तर दिया कि आज से पहले आपने कभी इतना परिश्रम नहीं किया, इसलिए आपको भोजन की आवश्यकता है। ये बात समझने वाली है कि प्राथमिकता और सम्मान परिश्रम करने वालों को ही मिलता है और परिश्रम भी सकारात्मक होना चाहिये। अगर आपसे कहा जाये कि एक दीवार को धक्का देकर दूसरी जगह स्थानांतरित कर दो, तो क्या ये सम्भव है और अगर बिना सोचे-समझे दीवार को धक्का देते रहे तो परिणाम नकारात्मक आना तय है।

ये बात समझने वाली है कि प्राथमिकता और सम्मान परिश्रम करने वालों को ही मिलता है और परिश्रम भी सकारात्मक होना चाहिये।

परिश्रम भी सिर्फ शारीरिक नहीं होता बल्कि मानसिक परिश्रम से भी बहुत कुछ हासिल किया जा सकता है। आज तक जो बड़े-बड़े शोध और आविष्कार हुए हैं वह मानसिक परिश्रम का ही परिणाम हैं। अगर जीवन को सफल बनाना है तो आलस्य तो छोड़ना ही पड़ेगा।

एक बात और कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं होता और परिश्रम करने से कभी भी पीछे नहीं हटना चाहिये।

बेचारा वजीर

किसी समय में फारस देश में एक सुल्तान था। वह अपने पुत्र से अत्यधिक प्रेम करता था। राजकुमार को शिकार करना बहुत पसंद था इसलिए वह अपना अधिकतर समय शिकार करने में ही व्यतीत करता था। जब राजकुमार शिकार पर जाया करता था, तो सुल्तान को उसकी चिन्ता लगी रहती थी। इसीलिए उसने अपने एक विश्वसनीय वजीर को राजकुमार का ध्यान रखने के लिए हमेशा उसके साथ रहने का आदेश दिया। वजीर सुल्तान की आज्ञानुसार हमेशा राजकुमार के साथ ही रहता और उसे अपनी आँखों से ओझल नहीं होने देता था।

एक दिन राजकुमार, वजीर एक शिकारी दल के साथ शिकार करने के लिए घने जंगल में गया। अचानक राजकुमार की निगाह एक हिरन पर पड़ी। वह उसका शिकार करने के लिए उसका पीछा करने लगा। हिरन का पीछा करते-करते वह दूर निकल आया और वजीर एवं शिकारी दल से अलग हो गया। आगे घने जंगल में पहुँचकर वह रास्ता भूल गया। बाहर निकलने का रास्ता ढूँढने के लिए वह इधर-उधर भटकने लगा। तभी एक जगह उसे एक खूबसूरत लड़की दिखी, जो एक पत्थर पर बैठी बुरी तरह से रो रही थी। राजकुमार उसके पास गया और बोला, ''तुम कौन हो और यहाँ घने जंगल में क्या कर रही हो?''

उसने जवाब दिया, ''मैं भारत के राजा की बेटी हूँ। मैं अपने शाही दल के साथ यहाँ से गुजर रही थी कि अचानक मैं अपने घोड़े से गिर पड़ी। मेरा घोड़ा भी पता नहीं कहाँ चला गया और मेरे साथी भी इस घने जंगल में कहीं खो गए हैं। मुझे जंगल से बाहर निकलने का रास्ता भी नहीं मालूम है।''

राजकुमार को उसकी कहानी सुनकर बड़ा दुख हुआ। उसने उस

लड़की को अपने घोड़े पर बैठाया और दोनों रास्ता ढूँढने लगे। रास्ते में एक टूटी-फूटी खंडहरनुमा इमारत के सामने उस लड़की ने घोड़ा रुकवा दिया। वह घोड़े से उतरी और इमारत के अंदर चली गई। राजकुमार भी उसके पीछे हो लिया। इमारत में अंदर प्रवेश करते ही राजकुमार को उस लड़की की आवाज सुनाई दी। वह किसी से कह रही थी, ''बेटा, इधर आओ। आज एक स्वस्थ व नौजवान राजकुमार मिला है। हम लोग उसे खाकर अपनी भूख मिटाएंगे।'' ये सुनकर राजकुमार समझ गया कि वह लड़की एक पिशाचनी है और अपना रूप बदल कर, उसे अपना भोजन बनाने के लिए यहाँ लेकर आई है। राजकुमार तुरंत ही अपने घोड़े पर सवार होकर वहाँ से निकलने लगा। यह देखकर पिशाचनी भी समझ गई कि राजकुमार को उसकी सच्चाई पता लग गई है। उसने राजकुमार से कहा, ''राजकुमार अब मैं तुम्हें नहीं मार पाऊंगी, क्योंकि तुम मेरी सच्चाई जान चुके हो। बताओ, मैं तुम्हारी क्या सहायता कर सकती हूँ।'' यह सुनकर राजकुमार बोला, ''अगर हो सके तो इस जंगल से बाहर निकलने में मेरी सहायता करो। मैं रास्ता भूल गया हूँ।''

वह बोली ''तुम अपने बाईं तरफ वाले रास्ते पर सीधे बढ़ते चले जाओ। तुम अपने घर पहुँच जाओगे।'' राजकुमार तुरंत अपने घोड़े पर सवार होकर तेजी के साथ उस रास्ते पर बढ़ता चला गया और कुछ ही देर में महल पहुँच गया। महल में पहुँचकर उसने सारी घटना अपने पिता को कह सुनाई कि किस प्रकार वह घने जंगल में रास्ता भटक गया था और कैसे एक पिशाचनी से जान बचाकर आया है। सुल्तान को यह सुनकर अपने वजीर पर अत्यधिक क्रोध आया। उसे लगा कि जरूर वजीर ने अपना दायित्व निभाने में लापरवाही की थी, जिससे राजकुमार मुसीबत में फँस गया। इसलिए उसने वजीर को सजा देने के लिए उसका सिर काटने का आदेश दे दिया। किसी ने सच ही कहा है राजा, अग्नि, जल पर विश्वास न करें। वे कुपित होकर कभी भी अनर्थ कर सकते हैं।

-साध्वी वसुमति

सूक्त

मानव-चेतना का सारा विकास विवादास्पद व्यक्तियों पर निर्भर है। सुकरात, ईसा, बुद्ध, महावीर आदि- कहीं कोई ऐसा प्रज्ञावान व्यक्ति हुआ जो विवादास्पद न रहा हो।

-ओशो (रजनीश)

हमारे सबसे नजदीकी रिश्तेदार पेड़

○ सद्‌गुरु जग्गी वासुदेव

हमारे सबसे नजदीकी रिश्तेदार पेड़ सद्‌गुरु बता रहे हैं कि किस तरह पेड़ हमारे जीवन के लिए अनिवार्य हैं, वास्तव में वे हमारे फेफड़ों का एक हिस्सा हैं।

पेड़ हमारे निकट संबंधी हैं। वे जो वायु छोड़ते हैं, उसे हम साँस की तरह लेते हैं, इसी तरह हम जो वायु छोड़ते हैं, उसे वे अपने अंदर लेते हैं।

पेड़ों का हमारे जीवन को चलाने में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान है। वे हमारे लिए हमारे फेफड़ों के बाहरी हिस्सों की तरह काम करते हैं। अगर आप जीना चाहते हैं तो आप अपने शरीर को अनदेखा नहीं कर सकते, और यह ग्रह भी हमारे शरीर से अलग नहीं है। आप जिसे 'मेरा शरीर' कहते हैं, वह इस धरती का एक हिस्सा है। आध्यात्मिक प्रक्रिया का सारा सार बस यही है।

जब हम 'आध्यात्मिकता' शब्द की बात करते हैं, तो हम ऊपर या नीचे नहीं देख रहे। हम अपने भीतर झाँकने और इसके स्वभाव को पहचानने की बात करते हैं। भीतर देखने का सबसे बुनियादी पहलू ये समझना है, कि आप स्वाभाविक रूप से अपने आसपास की हर चीज का एक हिस्सा हैं। इस एहसास के बिना, आध्यात्मिक प्रगति होना संभव नहीं है। यह आध्यात्मिकता का लक्ष्य नहीं है, यह तो बुनियादी बात है कि आप कौन हैं, आप खुद को क्या समझते हैं, यह तो बाकी सबका एक हिस्सा भर है।

आजकल, आधुनिक भौतिकी का कहना है कि यह सारा अस्तित्व बस एक ऊर्जा ही है। वैज्ञानिक सबूतों का कहना है कि आपके शरीर का हर अणु, लगातार सारे ब्रह्माण्ड के साथ सपंर्क में है। आध्यात्मिक प्रक्रिया व्यक्ति के बोध को निखरते हुए, इसे व्यक्ति के अनुभव में लाती है। खैर, एक वैज्ञानिक तथ्य, किसी के जीवन में कल्पना को जगाने के सिवा, और कुछ नहीं कर सकता। अगर यह आपके जीवन के लिए एक जीता-जागता अनुभव हो जाए, तो आपके लिए अपने आसपास की चीजों और और अपना ध्यान रखना स्वाभाविक हो जाएगा।

एक वृक्ष आपके लिए कोई परियोजना नहीं, एक वृक्ष आपका जीवन है।

यह आपके अस्तित्व का बाहरी हिस्सा है। यह हर रोज आपके लिए श्वास लेता है। यह आपके फेफड़ों से कहीं ज्यादा है। आपके फेफड़े पेड़ों के बिना कुछ नहीं कर सकते। हमने देहाती भाइयों को बहुत ही सादे शब्दों में यह बात समझायी, इसके बाद वे जिस उत्साह, लगन और धुन का परिचय देते हैं, वह वाकई उल्लेखनीय है। उन्हें इस रूप में देख कर आनंद आ जाता है।

जब मैं गाँवों में जा कर उन लोगों को देखता हूँ जिन्हें अपनी रोटी कमाने के लिए रोज कड़ी मेहनत करनी होती है, फिर मैं उन्हें समय निकाल कर यह काम करते देखता हूँ, तो मेरी आँखें नम हो जाती हैं क्योंकि ये उन लोगों में से नहीं, जिन्हें जलवायु परिवर्तन के बारे में कुछ पता हो। ये उन लोगों में से नहीं, जो ग्लोबल वार्मिंग के बारे में जानते हैं। ये वे लोग हैं, जिनके पास संसार में सबसे कम संपदा है, यदि इनकी ओर से कार्बन का प्रभाव है भी, तो नाम मात्र के लिए ही हैं। यहाँ तक कि एक चिड़िया भी इन लोगों के मुकाबले कहीं बड़ा कार्बन पदचिन्ह छोड़ती है क्योंकि ये बस धरती के सहारे जीते हैं। इनके घरों में बिजली नहीं है, ये कुछ नहीं जला रहे। ये लोग पर्यावरण के सबसे ज्यादा अनुकूल हैं, पर हम उन्हें ऐसा करने (पेड़ लगाने) को कह रहे हैं। और इनकी प्रतिक्रिया और उत्साह वाकई प्रशंसा के लायक है। मुझे उम्मीद है कि इन सरल स्वभाव के लोगों के हाथों, विशाल व लगभग असंभव मात्रा में पौधे लगाने की यह पहल, सभी को प्रेरणा देगी।

सद्गुरु को उनके पर्यावरण से जुड़े प्रयासों के लिए, भारत के सर्वश्रेष्ठ पुरस्कारों में से एक, 'इंदिरा गांधी पर्यावरण पुरस्कार' से सम्मानित किया गया था। यह लेख, इस अवसर दिए गए उनके भाषण के कुछ अंशों से लिया गया है। यह पुरस्कार, 5 जून 2010 को, उनकी परियोजना 'ग्रीन हैंड' को दिया गया था, जिसके अनुसार दो मिलियन स्वयं सेवकों ने 1 करोड़ सत्तर से अधिक वृक्षों का रोपण किया था।

अपरिग्रही संन्यासी

एक संन्यासी अपने आपको अपरिग्रही कहता था। उसने अपने पास केवल एक तुंबा रखा था। एक दिन उसे प्यास लगी और वह नदी पर गया। साथ में तुंबा लिया। उसके पीछे-पीछे एक कुत्ता भी वहां पहुँचा। कुत्ते ने चट से पानी पिया और भाग गया। संन्यासी ने सोचा, 'मैं अपरिग्रही हूँ या कुत्ता, क्योंकि वह मेरे बाद आया और पानी पीकर चला भी गया। इसलिए सच्चा संन्यासी वहीं हैं। वहीं मेरा गुरु है।' यह कहकर उसने तुंबा नदी को अर्पित कर दिया।

-प्रस्तुति : गगन जैन

श्रद्धा-विश्वास की अद्भुत कथा

कल सायंकाल की ही तो बात है।

गाँधी-मैदान में बैठा देख रहा था भगवान् अंशुमाली की ओर, जो द्रुतगति से अस्ताचल की ओर जा रहे थे।

अचानक एक वृद्ध बंगाली सज्जन आकर मेरी बेंच पर बैठ गये।

सफेद दाढ़ी, सफेद कुर्ता-धोती, हाथ में बंगला का एक दैनिक।

बात शुरू की उन्होंने।

सामान्य परिचय की चर्चा उठी तो काशी का नाम आते ही श्रद्धा से भट्टाचार्य महाशय का हृदय भर उठा।

बोले- 'काशी तो कैलाश है। परंतु अब कहाँ रह गयी वह काशी? अब तो वह कलकत्ता-जैसी नगरी बनती जा रही है क्या खयाल है आपका?'

मैं क्या कहता! काशी में भी आधुनिकता का रंग आ ही रहा है।

'बाबा विश्वनाथ की नगरी में, माँ अन्नपूर्णा के दरबार में कभी कोई भूखा नहीं रह सकता। इस बात की लोगों ने परीक्षा करके देखी है।' कहते-कहते वे सुना गये लगभग 19वीं शती के मध्य की एक घटना।

बोले- मेरे ही पूर्व पुरुषों के सम्बन्धी एक वृद्ध दम्पती ने काशीवास का निर्णय किया। उनका एक भतीजा था, जो कलकत्ते में नौकरी करता था। उसने उन्हें काशी पहुँचा दिया और उनके खर्च के लिये बीस रुपया मासिक भेजने लगा।

उस जमाने में बीस रुपये का मूल्य बहुत था। वृद्ध ब्राह्मण दम्पती स्वयं तो मजे में अपनी गुजर करते ही, साधु-संन्यासियों की भी सेवा करते, फिर भी दस-पाँच रुपया बच जाता।

'अचानक भतीजे की नौकरी छूट गयी। दो महीने के खर्च के लिये चालीस रुपये भेजते हुए उसने लिखा-

'ताऊजी! मेरी नौकरी छूट गयी है। दो महीने की तनखाह मिली है, इनमें से आपको भी दो माह का खर्च भेज रहा हूँ।

वृद्ध दम्पती को चिंता तो हुई, पर उन्होंने सब कुछ बाबा विश्वनाथ और अन्नपूर्णा माईपर छोड़ दिया।

पहले की संचित निधि और अन्त में मिले चालीस रुपयों से वृद्ध दम्पती ने छः रू. मास तक काम चलाया। अन्त में एक दिन ऐसा आ ही गया, जब शकरकन्द का एक टुकड़ा घर में बच रहा। उसी को खाकर दोनों ने पानी पी लिया।

दिन भर यों ही निकल गया।

उन दिनों कुछ मारवाड़ी सज्जन सीधा बाँटा करते थे। एक-एक सीधे में आटा, दाल, चावल, घी आदि पर्याप्त रहता। लगभग 3 रुपये का सामान, ऊपर से 2 रुपये दक्षिणा भी देते। सेठ के कर्मचारी उन लोगों के घर सीधा पहुँचा आते थे, जिनके प्रति सेठ की श्रद्धा होती थी।

वृद्ध ब्राह्मण दम्पती का तो निश्चय था कि वे विश्वनाथ की नगरी में माँ अन्नपूर्णा के रहते किसी से भिक्षा माँगकर पेट न भरेंगे। वे चुपचाप पड़े थे अपनी कोठरी में।

दूसरे दिन वृद्ध दम्पती की कोठरी के बाहर एक अपरूप बालिका आ खड़ी हुई। सीधा बाँटने वाले सेठ के कर्मचारी वहाँ से निकले तो उसने उन्हें पास बुलाया। उनके पास आने पर बोली- 'देखो भाई! मेरी बूढ़ी माँ और बाबा कल से भूखे पड़े हैं। तुम एक सीधा हमें भी दे जाओ।'

कर्मचारी बोले- 'सीधा हम उन्हीं लोगों को बाँटते हैं, जिनको बाँटने की आज्ञा हमारा सेठ देता है। बिना आज्ञा हम सीधा नहीं बाँट सकते।'

वह बालिका आँखों में आँसू भरकर बोली- 'तो क्या होगा बाबा? मेरे बूढ़े माँ-बाबा के पास कुछ नहीं है। मर जायँगे वे बिना भोजन के? अपने सेठ से कहो न जाकर कि मेरे माँ-बाबा भूखे पड़े हैं कल से।'

'अच्छा माँ! हम सेठ से जाकर जरूर कहेंगे।'

सेठ से उसके कर्मचारियों ने जाकर कहा- 'सेठजी! रास्ते में एक बालिका हमें मिली थी। बड़े सम्पन्न घरकी लड़की जान पड़ती थी। वह कह रही थी कि उसके बूढ़े माता-पिता ने कल से कुछ नहीं खाया है। उनके लिये एक सीधा माँगा है।'

सेठ जी के मन में आ गया- 'चलो देखें।'

सीधा लेकर वे कर्मचारियों के साथ वृद्ध ब्राह्मण दम्पती के मकान पर पहुँचे। कुण्डी खटखटायी।

वृद्ध दम्पती ने किसी तरह दरवाजा खोला। सेठ ने उनसे पूछा- 'बाबा! आपकी बेटी कहाँ है?'

वे तो हैरान। बोले- 'कहाँ? हमारे तो कोई बेटी नहीं, एक भतीजा है जो कलकत्ते में रहता है।'

'अच्छा, यह तो बताइये, आपने कल से कुछ खाया पिया है या नहीं?'

'क्यों हमने तो किसी से कुछ कहा नहीं!'

'आपकी बेटी कह रही थी कि मेरे माँ-बाबा कल से भूखे हैं। भूख से उनके प्राण जा रहे हैं!'

'सेठजी, और किसी ने कहा होगा। आप मकान भूल तो नहीं गये हैं?'

सेठ ने कर्मचारियों से पूछा। वे बोले- 'नहीं सेठ जी! यही मकान है।

सेठ के बहुत कहने पर वृद्ध दम्पती ने बताया कि बाबा विश्वनाथ और माँ अन्नपूर्णा को छोड़कर और कोई नहीं जानता कि हम दोनों ने कल से कुछ नहीं खाया। हमने किसी से कहा ही नहीं।

सेठ का आग्रह स्वीकार कर वृद्ध दम्पती को उसका सीधा लेना ही पड़ा और तब से नियमित रूप से वहाँ से भी सीधा आने लगा।

कुछ दिनों के बाद भतीजे का पत्र आया जिसमें लिखा था- 'ताऊजी! आप लोगों के आशीर्वाद से मुझे पहले से भी अच्छी

नौकरी मिल गयी है। अब मैं आपको तीस रुपये मासिक भेजा करूँगा। खाना बनाने में आपको बड़ा कष्ट होता होगा। कोई दाई आदि रख लीजियेगा।'

वृद्ध दम्पती को भतीजे का पत्र पाकर प्रसन्नता हुई। उन्होंने सेठ की कोठी पर जाकर उनसे भेंट की और उनसे अनुरोध किया कि वे अब उनको मिलने वाला सीधा किसी अन्य व्यक्ति को दे दिया करें क्योंकि अब उनके भतीजे को काम मिल गया।

भतीजे का पत्र भी उन्होंने सेठ को दिखाया। पर सेठ बोला- 'यह नहीं हो सकता बाबा। आप नाराज न हों। जैसा आपका वह भतीजा, वैसे ही मैं आपका बेटा। आपको तो यह सीधा लेना ही होगा!'

वृद्ध दम्पती सेठ के आग्रह को टाल नहीं सके। सेठ के यहाँ से सीधा आता रहा। भतीजे के यहाँ से आने वाले पैसे से वे साधु-संन्यासियों और दीनों की सेवा करने लगे। श्रद्धा और विश्वास की कैसी अद्‌भुत कहानी।

प्रस्तुति : नमन जैन

चुटकुले

(1) यकीन नहीं आ रहा, जिस देश में धन वर्षा यंत्र मात्र 2,100 रुपये में मिलता हो... उस देश में आर्थिक मंदी कैसे आ सकती है?

(2) KBC में अमिताभ बच्चन ने एक प्रतिभागी से पूछा कि क्या कीजिएगा इतनी धनराशि का?... तो प्रतिभागी ने कहा कि इस धनराशि से चालान भरूंगा।

(3) टीचर- अगर रात में मच्छर काटे तो क्या करना चाहिए?

स्टूडेंट- चुपचाप कंबल ओढ़कर सो ही जाना चाहिए क्योंकि आप रजनीकांत तो हैं नहीं जो मच्छर से सॉरी बुलवा लेंगे।

(5) राजस्थान में गुटखा बैन होने से कुंवारों के पैरेट्स काफी खुश हैं... क्योंकि उनके बेटों के दांत पीले होने के कारण हाथ पीले नहीं हो रहे थे।

(6) पप्पू- पापा रावण को सिर्फ नेता लोग ही क्यों जलाते हैं?

पिता- पप्पू, मुखाग्नि सिर्फ सगे-संबंधी ही दिया करते हैं।

-प्रस्तुति : अश्वीनी तिवारी

हर दृष्टि से उपयोगी है तुलसी

हिंदू धर्म में तुलसी के पौधे को बेहद पवित्र माना जाता है इतना ही नहीं तुलसी भगवान विष्णु को भी अतिप्रिय है। यही वजह है कि सदियों से ही हिंदू धर्म में तुलसी की पूजा करने की परंपरा चली आ रही है।

तुलसी का पौधा पवित्र होने के साथ-साथ औषधीय गुणों से भरपूर है। इसलिए आयुर्वेद में प्राचीन काल से ही तुलसी के पत्तों का इस्तेमाल कई तरह के रोगों के उपचार के लिए भी किया जाता रहा है।

सांस की बीमारी, मुंह के रोग, बुखार, दमा और फेफड़ों की बीमारी सहित कई रोगों के इलाज में तुलसी के पत्ते रामबाण साबित होते हैं। इससे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है और संक्रामक रोगों से छुटकारा भी मिलता है। लेकिन आज इस लेख के माध्यम से हम आपको तुलसी के फायदे बताने जा रहे हैं जो आपको शायद ही कोई बता पाए।

तुलसी के फायदे

(1) रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाए

तुलसी के पत्तों में जीवनशैली से जुड़ी कई बीमारियों का कारगर इलाज छुपा हुआ है। आयुर्वेद में कहा गया है कि प्रतिदिन तुलसी की कुछ पत्तियों को चबाकर खाने से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।

(2) दिमागी ताकत को बढ़ाती है तुलसी

अगर आप अपने मस्तिष्क की शक्ति को बढ़ाना चाहते हैं तो फिर आपको हर रोज तुलसी के 5 पत्तों का सेवन पानी के साथ करना चाहिए। इससे बुद्धि तेज होती है और दिमागी ताकत बढ़ती है।

(3) पुराना सिरदर्द हो जाता है गायब

बताया जाता है कि तुलसी के तेल की एक से दो बूंदे नाक में टपकाने से पुराना सिरदर्द भी गायब हो जाता है और इसके साथ ही सिर से संबंधित दूसरे रोग भी दूर होते हैं।

(4) सर्दी-जुकाम हो जाता है ठीक

छोटे बच्चों को बार-बार सर्दी-जुकाम की समस्या हो जाती है ऐसे में तुलसी के पत्तों का रस और अदरक के रस की कुछ बूंदों को शहद के साथ मिलाकर बच्चों को देना चाहिए। इससे बच्चों का सर्दी-जुकाम और कफ ठीक हो जाता है।

ये है तुलसी के फायदे बहरहाल हमे विश्वास है कि इन 4 फायदों को जानने के बाद आप भी नियमित रुप से तुलसी के पत्तों का सेवन करना शुरू कर देंगे ताकि आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत बनी रहे और आपका शरीर हमेशा निरोगी व स्वस्थ रहे।

-योगी अरुण

मासिक राशि भविष्यफल-नवम्बर 2019

○ डॉ. एन.पी. मित्तल, पलवल

मेष- मेष राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से सामान्य लाभ वाला रहेगा। इन जातकों को इस माह हर क्षेत्र में सतर्कता अपेक्षित रहेगी। जो लोग राजनीतिज्ञ हैं उन्हें विरोध का सामना करना पड़ सकता है। सरकारी कर्मचारियों का सामान्य रूप से कार्य चलेगा। अपने जीवन साथी के स्वास्थ्य का ख्याल रखें।

वृष- वृष राशि के जातकों को इस माह व्यापार तथा व्यवसाय में लाभ की अधिक अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए। जितनी मेहनत करेंगे, उससे कम ही लाभ मिलेगा। अनजान लोगों पर भरोसा न करें। सम्पत्ति सम्बन्धित वाद-विवाद होंगे पर इन जातकों को उसमें सफलता मिलेगी। छोटी-बड़ी यात्राएं-करनी पड़ेंगी। जिनके कोर्ट-कचहरी के मामले हैं वो अभी लटकेंगे।

मिथुन- मिथुन राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से लाभ प्रद रहेगा। आय की अपेक्षा व्यय की मात्रा कम होगी जिससे अर्थ संचय का लाभ मिलेगा। अपनी चीजें सम्भाल कर रखें, कोई आपका प्रिय ही आपको धोखा दे सकता है। किसी जमीन जायदाद संबंधी विवाद में ये जातक उलझ सकते हैं। समाज में यश-मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

कर्क- कर्क राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से पूर्वार्ध में लाभप्रद तथा उत्तरार्ध में सामान्य रहेगा। किसान वर्ग फिर भी लाभदायक स्थिति में रहेगा। शत्रुओं से सावधान रहें। इस समय किसी स्कीम में पैसा लगाना अच्छा नहीं है। अपने तथा अपने जीवन साथी के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें।

सिंह- सिंह राशि के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से लाभालाभ की स्थिति लिये रहेगा। घरेलू मामलों में उलझनों के कारण पूरा ध्यान व्यापार-व्यवसाय में नहीं लगा पायेंगे, फिर भी बड़े लोगों से मुलाकात के चलते कुछ उपलब्धियां मिलेंगी। कुछ जातकों का दिया हुआ उधार पट जायेगा। दाम्पत्य जीवन सामान्य रूप से चलेगा। समाज में यश व मान बना रहेगा।

कन्या- कन्या राशि के जातकों को व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि में आंशिक लाभ होगा। कोर्ट-कचहरी में सफलता मिलेगी। दाम्पत्य जीवन एवं साझेदारी में दो तीन बार आपसी विवाद कलह के अवसर आयेंगे, इस समय संयमित रहकर समझदारी से काम निकाल लें। इन जातकों का तथा जीवन साथी का स्वास्थ्य विपरीत रूप से प्रभावित होगा।

तुला- तुला राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह सामान्य लाभ की स्थिति लिये होगा। नौकरी-पेशा जातकों की पदोन्नति हो सकती है। कुछ जातकों का पिछला रूका हुआ पैसा मिलने की उम्मीद है। दाम्पत्य जीवन एवं साझेदारी के लिये यह माह नौक-झौंक वाला है। मानसिक परेशानी के समय बुजुर्गों की राय लेने से लाभ होगा।

वृश्चिक- वृश्चिक राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से उत्तरार्ध की अपेक्षा पूर्वार्ध अच्छा नहीं है। पूर्वार्ध में व्यय की अधिकता रहेगी जिससे मानसिक परेशानी संभव है। उत्तरार्ध में किसी नई योजना का क्रियान्वयन सम्भावित है। नये व्यक्तियों से मुलाकात होगी। वाहन संबधी कोई परेशानी आ सकती है। अपने तथा अपने जीवन साथी के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें।

धनु- धनु राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से कुल मिलाकर साधारण लाभ वाला है। आय के साथ-साथ व्ययाधिक्य भी होगा। घर-परिवार में कोई आयोजन होगा और मनोरंजन आदि पर भी व्यय हो सकता है। हां कोई नई योजना पर कार्य शुरू किया जा सकता है। किसी भूमि-भवन के कार्य में भी सफलता मिल सकती है। समाज में यश व मान बना रहेगा।

मकर- मकर राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से आशानुकूल फलदायक है। सरकारी कर्मचारी व नौकरी-पेशा जातकों का अपने अधिकारियों से ताल मेल बना रहेगा। राजनैतिक क्षेत्रों में रूचि रखने वालों के लिये भी समय अच्छा है। जहां कहीं से अचानक धन प्राप्ति के योग हैं, वहीं पर व्यय के अधिक होने का भी खतरा है।

कुंभ- कुंभ राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से लाभप्रद है। आमोद-प्रमोद के मौके मिलेंगे। अचानक भी कोई रकम या शुभ सूचना प्राप्त हो सकती है। किन्ही जातकों को राजकीय सम्मान भी मिल सकता है। धार्मिक व सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लेने के अवसर आयेंगे। दाम्पत्य जीवन यथा सम्भव सुखी रहेगा।

मीन- मीन राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से लाभालाभ की स्थिति लिये होगा। अकारण वाद-विवाद से दूर रहें। किसी बात को लेकर मानसिक चिंता बनी रहेगी। आलस्य को त्यागकर पुरूषार्थ का सहारा लें। कार्यों में सफलता मिलेगी। वाहन चलाते समय सावधानी बरतें। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। सम्पत्ति सम्बन्धित वाद-विवाद होंगे पर इन जातकों को उसमें सफलता मिलेगी।

-इति शुभम्

निष्काम सेवा और परोपकार है सर्व-सम्मत धर्म-मार्ग

○ आचार्य रूपचन्द्र

20 अक्टूबर 2019, मानव मंदिर मिशन, नई दिल्ली में प्राज्ञ-संघ की स्वाध्याय-गोष्ठी को संबोधित करते हुए पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्र जी ने कहा- स्वाध्याय मन की निर्मलता का बड़ा साधन है। किंतु निर्मल दृष्टि जब कार्य-क्षेत्र में उतरती है, तब उसका स्वरूप निष्काम सेवा और परोपकार के रूप में प्रकट होता है। अरिहंतों की धर्म-देशना का उद्देश्य क्या है? उत्तर मिला- सर्व जन हिताय, सर्व जन सुखाय समस्त प्राणियों के हित और सुख के लिए बुद्ध-पुरूषों का प्रवचन होता है। आत्म-तत्त्व की गहराई में उतरना जन-साधारण के लिए संभव नहीं। किंतु निष्काम सेवा, क्लेश-पीड़ित प्राणियों के प्रति करूणा-भाव साधना की ऊंचाइयों का सहज सरल मार्ग है। अठारह पुराणों की रचना के बाद दो शब्दों में वेद-व्यासजी ने कहा- **परोपकारः पुण्याय, पापाय पीड़नम्-** इसी का अनुवाद, अनुमोदना करते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा-

पर हित सरिस धर्म नहीं भाई
पर-पीड़ा सम नहीं अधमाई

पर-हित सरीखा धर्म नहीं। पर-पीड़ा समान कोई अधर्म नहीं। महात्मा गांधी का प्रिय भजन-

वैष्णव जन तो तेने कहिए
जे पीर पराई जाणे रे।

वैष्णव जन वह है जिसका मन पराई पीर में पिघल जाए। इस प्रकार हम देखते है सभी धर्म परोपकार और सेवा-धर्म की महिमा स्वीकार करते हैं। किंतु वह सेवा-परोपकार धर्म निष्काम होना चाहिए। उसके लिए मन में किसी प्रकार का अभिमान नहीं होना चाहिए।

-पर दुखे उपकार करे तो ही
मन अभिमान ने आणे रे (वैष्णव जन...)

आपने कहा- स्वाध्याय की सरसता और समरसता के लिए निष्काम सेवा, करूणा और परोपकार से जुड़ना बहुत जरूरी है। तभी हम अपने तत्व-ज्ञान को जन-जन की संवेदनाओं तक विस्तार दे पाएंगे।

पूज्य आचार्यवर तथा पूज्या महासती मंजुलाश्री जी के मार्ग-दर्शन में मानव मंदिर मिशन, नई दिल्ली, हिसार, हरियाणा तथा सुनाम-पंजाब की शिक्षा, सेवा तथा योग-परक प्रवृत्तियों निरंतर गतिमान है।

2 अक्टूबर को मनाया स्वच्छता दिवस :

पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी महाराज के सान्निध्य में एवं साध्वी समताश्री जी के मार्गदर्शन में मानव मंदिर के बच्चों ने आस-पास की सफाई एवं वृक्षारोपण कर स्वच्छता दिवस को बडे ही उत्साह से मनाया।

रूपांतरण-योग-साधना के लिए यूरोपीय देशों की यात्रा :

पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी महाराज के शिष्य श्री अरूण योगी जी पूज्य गुरूदेव के संदेशों व उनके सान्निध्य में चल रहे योग-साधना-मिशन के प्रचार-प्रसार हेतु योगी जी ने स्वीडन, लाटविया, स्टोनिया, लुथवेनिया आदि देशों की जो 21 दिवसीय रूपांतरण योग साधना-यात्रा बहुत ही सफल रही, जिसमें मंत्र-अभ्यास, योग-अभ्यास के साथ-साथ स्वास्थ्य एवं अध्यात्म से जुड़े अलग-अलग विषयों पर व्याख्यान व प्रश्न-उत्तर भी हुए। आपको रूपरेखा के इस अंक में प्रकाशित छायाचित्र के माध्यम से सभी जानकारी प्राप्त हो जायेगी। इस यात्रा के दौरान साधना के कई रूपांतरण-योग-शिविर आयोजित किये गये।

निमंत्रण

1 दिसम्बर को मानव मंदिर मिशन का 38वाँ वार्षिकोत्सव

1 दिसम्बर दिन रविवार प्रातः 10 बजे से मानव मंदिर मिशन का 38वाँ वार्षिकोत्सव तथा मानव मंदिर गुरूकुल का रजत जयंती समारोह, मानव मंदिर परिसर में मनाया जायेगा। इस प्रसंग पर देश-विदेश से गण-मान्य व्यक्तियों की विशेषतः उपस्थिति रहेगी। मानव मंदिर एवं रूपरेखा परिवार आप सभी पाठकों को सहृदय निमंत्रित करता है। जिसकी विशेष जानकारी आप हमारी वेबसाईट- www.manavmandirgurukul.org पर भी प्राप्त कर सकते हैं। आपको मोबाईल-संदेश, वाट्सऐप, सोशल-मिडिया तथा ई-मेल से भी जानकारी भेजी जायेगी।

फोटो-1. यूरोप के देश लुथवेनिया में तीन दिवसीय योग-शिविर के पश्चात् पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी के शिष्य श्री अरूण योगी जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए साधक-गण।
फोटो-2. इसी शिविर में श्री योगी जी से ब्रह्म क्रिया का प्रशिक्षण लेते हुए शिविरार्थी।

-यूरोप के खूबसूरत शहर पनीवेजिस (लुथवेनिया) में ध्यान-साधना के पश्चात् पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी के शिष्य श्री अरूण योगी जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए साधक-ग्रुप।

-यूरोप के शांत शहर कौनस (लुथवेनिया) में एक दिवसीय योग-शिविर के पश्चात् पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी के शिष्य श्री अरूण योगी जी के साथ प्रार्थना मुद्रा में साधक-जन।

-यूरोप के देश लाटविया में एक दिवसीय योग-शिविर के पश्चात् पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी के शिष्य श्री अरूण योगी जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए साधक-ग्रुप।

-गांधी जयंती व स्वच्छता दिवस में मानव मंदिर गुरूकुल के बच्चे भाग लेते हुए।

P. R. No.: DL(S)-17/3082/2018-20
Rgn. No.: DELHIN/2000/2473
Date of Post : 27-28

SEVA SNEH
Wellness Solutions

हर्बल-प्रसादम्

19 जड़ी बूटियों से निर्मित चाय

मधुमेह और वजन को नियंत्रित करने में सहायक

मिश्रित आयुर्वेदिक व हर्बल तत्वों का विवरण-

- स्टीविया
- ग्रीन-टी
- गुड़मार
- अमृता (गिलोय)
- त्रिफला (आँवला, हरड़ व बहेड़ा)
- मेथी
- स्नॉय पत्ती

- अजमोथा
- पिप्पलि
- अजवायन
- जामुन के बीज का सत्त
- तुलसी
- अदरक
- जीरा
- काली मिर्च
- नींबू का सत्त
- लवण

अनेकों रोगों के निवारण का एक मात्र सूत्र

हर्बल प्रसादम् के फायदे-

वात, पित्त, कफ, त्रिदोष नाशक, वजन को नियंत्रित करता है। रक्त संचार को सुचारू करने वाली, रक्तचाप, शुगर, सिर दर्द, कब्ज, डिप्रेशन, अनिद्रा, जोड़ों का दर्द, गठिया, गैस, पित्त, कफ, एलर्जी, अस्थमा, गांठ बनना, साइनस, नजला, गले की खरास, थाईराइड आदि अनेकों बिमारियों को ठीक करने में सहायक। शरीर के अंदर मौजूद विषाक्त तत्वों (टॉक्सिन) को साफ कर रक्त शोधन करता है जिससे चेहरे पर कांती और तेज झलकता है। कैंसर जैसे भयंकर बिमारियों को होने से बचता है और यदि हो गया है तो ठीक करने में मददकारी। क्योंकि इसमें है 19 आयुर्वेदिक हर्बल औषधियों का मिश्रण।

बनाना बहुत ही आसान- सिर्फ एक कप (100ml) खौले हुए पानी में एक टी बैग डाले बस तैयार।

यह चाय नहीं हर्बल औषधि है

आर्डर के लिए संपर्क करें-

(+91) 9868-99-0099, 9891-19-3777

E-mail : order@herbalprasadam.in, Website : www.herbalprasadam.in

स्वाद, स्वास्थ्य और सेवा की त्रिवेणी

आय का उपयोग जरूरतमंद, बेसहारा, विकलांग, अनाथ बच्चों व माताओं के लिए होता है

All Proceeds go to Orphans, Needy, Handicapped Children and Women

प्रकाशक व मुद्रक : **श्री अरुण तिवारी,** मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.) के.एच.–57 जैन आश्रम, रिंग रोड़, सराय काले खाँ, इंडियन ऑयल पेट्रोल पम्प के पीछे, पो. बो.–3240, नई दिल्ली–110013, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस–1 से मुद्रित।

संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया